Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष
1

मूल्य
300 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
The Weekly
BADAR Qadian
HINDI

अंक
23

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

11 आगस्त 2016 ई 7 ज़िलकअदा 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

यह मत समझो कि जिस को दुख तथा ग़म पहुंचता है वह दुर्भाग्य पूर्ण है। नहीं। ख़ुदा उसे प्यार करता है। जैसे मरहम लगाने से पहले चीर और शल्य प्रक्रिया चाहिए। अत: यह मानव प्रकृति में एक बात है जिससे अल्लाह तआला यह साबित करता है कि दुनिया की सच्चाई क्या है और इसमें क्या बलाएं और परेशानियां आती हैं। परीक्षाओं में ही दुआओं के अजीबव ग़रीब गुण और प्रभाव दिखाई देते हैं और सच तो यह है कि हमारा ख़ुदा तो दुआओं ही से पहचाना जाता है। ”

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अल्लाह चाहता तो इंसान को एक स्थिति में रख सकता था। मगर कुछ बातें और मामले ऐसे होते हैं कि इस पर कुछ अजीब व ग़रीब समय और स्थितियां आती रहती हैं। उनमें से एक दु:ख की भी हालत है। इन हालतों के परिवर्तन और समय की तबदीली से अल्लाह तआला की अजीब अजीब कुदरतें और रहस्य प्रकट होती हैं ......

जिन लोगों को कोई दु:ख तथा चिन्ता दुनिया में नहीं पहुंचती और जो बजाय ख़ुद अपने आप को बड़े ही भाग्यशाली और समृद्ध समझते हैं, वह अल्लाह के कई रहस्य और तथ्यों से अनभिज्ञ और अपरिचित रहते हैं। उसका ऐसा ही उदाहरण है कि मदरसों में शिक्षा के साथ यह भी अनिवार्य रखा गया है कि एक निश्चित समय तक लड़के व्यायाम भी करें। इस व्यायाम और नियम आदि से जो सिखाई जाती है शिक्षा के अधिकारियों की इस से इच्छा तो हो नहीं सकती कि उन्हें किसी लड़ाई के लिए तैयार किया जाता है और न हो सकती है कि वह समय बर्बाद किया है और लोगों का समय खेल कूद में दिया जाता है, लेकिन मूल बात यह है कि अंग जो हरकत को चाहते हैं अगर उन्हें बिल्कुल बेकार छोड़ दिया जाए तो उनकी शक्तियां दूर और बर्बाद हो जाएं और इस तरह से इसे पूरा किया जाता है। देखने में व्यायाम करने से अंगों को चोट और किसी क़दर थकान उनकी परवरिश और स्वास्थ्य का कारण होती है। इसी तरह से हमारी प्रकृति कुछ ऐसी हुई कि वह दुख को भी चाहती है ताकि पूर्णता हो जाए। इसलिए अल्लाह की कृपा और अनुग्रह ही होता है जो वह मनुष्य को कभी कभी परीक्षाओं में डाल देता है। इससे कज़ा पर राज़ी होने और धैर्य की शक्तियां बढ़ती हैं। जिस व्यक्ति को ख़ुदा पर विश्वास नहीं होता उनकी यह हालत होती है कि वह थोड़ी सी तकलीफ़ पहुँचने पर घबरा जाते हैं और वह आत्महत्या में आराम दिखता है। मगर इंसान की पूर्ति और प्रशिक्षण चाहता है कि इस प्रकार की परीक्षाएं आएं ताकि अल्लाह तआला पर उसका विश्वास बढ़े।

अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है लेकिन जिन को मतभेद और परीक्षा नहीं आती उनकी हालत देखो कि कैसे होती है। वह बिल्कुल दुनिया और उसकी इच्छाओं में जुट गए हैं। उनका सिर ऊपर की ओर नहीं उठता। ख़ुदा तआला का उन्हें भूलकर भी ख्याल नहीं आता। ये वे लोग हैं जिन्होंने उन्नत गुणों को बर्बाद कर दिया और बजाय कम मूल्यांकन की बातें प्राप्त कीं । क्योंकि ईमान और ज्ञान की तरक्की उनके लिए वे राहत और संतोष का सामान पैदा करते जो किसी धन दौलत और दुनिया के आनन्द में नहीं हैं। मगर अफसोस कि वह एक बच्चे की तरह आग के अंगारा पर ख़ुश हो जाते हैं और उस की जलन और नुकसान पहुंचाने के बारे में परिचित नहीं। लेकिन जिन पर अल्लाह तआला का अनुग्रह होता है और जिन्हें ईमान और विश्वास की दौलत से मालामाल करता है उन पर परीक्षा आती है।

जो कहते हैं कि हम पर कोई परीक्षा नहीं आई वह हतभाग्य है। वह नाज़ तथा नेअमत में रहकर जानवरों का जीवन व्यतीत करते हैं। उनकी भाषा है लेकिन वह सत्य बोल नहीं सकती। ख़ुदा की प्रंशसा इस पर जारी नहीं होती बल्कि वह केवल अनाचार तथा दुराचार की बातें करने के लिए और मज़ा चखने के लिए है। उनकी आँखे हैं मगर वह प्रकृति का नज़ारा नहीं देख सकतीं बल्कि वह व्यभिचार के लिए हैं। फिर उन्हें ख़ुशी और राहत कहां से मिलती है। यह मत समझो कि जिस को दु:ख तथा ग़म पहुंचता है वह दुर्भाग्य पूर्ण है। नहीं। ख़ुदा उस से प्यार करता है। जैसे मरहम लगाने से पहले चीर और शल्य प्रक्रिया चाहिए। अत: यह मानव प्रकृति में एक बात है जिससे अल्लाह तआला यह साबित करता है कि दुनिया की सच्चाई क्या है और इसमें क्या बलाएं और परेशानियां आती हैं। परीक्षाओं में ही दुआओं के अजीबव ग़रीब गुण और प्रभाव दिखाई देते हैं और सच तो यह है कि हमारा ख़ुदा तो दुआओं ही से पहचाना जाता है। ”

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 आधुनिक संस्करण पृष्ठ 146-147)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

मेरा आप को यह संदेश है कि अपने जन्म के उद्देश्य को याद रखें और फिर अल्लाह तआला की मुहब्बत में बढ़ने और तक्वा में विकास के लिए प्रयासरत रहें।

अल्लाह तआला ने इबादत के जो तरीके सिखाए हैं उनमें से एक नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना है। यह आदेश पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए है और उनके बच्चों के लिए भी जो दस साल की उम्र के हैं कि वे नमाज़ अदा करें। पुरुषों के लिए यह आदेश है कि नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने की व्यवस्था करें और मस्जिदों में जाएं और उन्हें आबाद करें और उसके फज़्ल को तलाश करें। पांचों समय नमाज़ के विषय में कोई छूट नहीं। अतः हर बैअत करने वाले को, हर अहमदी को इस स्पष्ट आदेश का पालन करना चाहिए।

हर अहमदी जहां अपनी इबादतों की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए प्रयास करे वहां समय के ख़लीफा से व्यक्तिगत संबंध स्थापित करे और आज्ञाकारिता की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रयास करे और संघर्ष करे।

मैंने बार बार दुनिया के अहमदियों को इस ओर ध्यान दिलाया है कि mta पर जो कार्यक्रम आते हैं उन्हें देखें। माता पिता भी इस ओर ध्यान दें और अपनी औलाद को भी एम.टी.ए से जोड़े। यह भी एक आध्यात्मिक खाना है जो आप के आध्यात्मिक अस्तित्व का माध्यम है।

सन्देश सय्यदना अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जलसा सालाना आस्ट्रेलिया दिसम्बर 2015 ई

जमाअत अहमदिया आस्ट्रेलिया का 31 वां सालाना जलसा 25 से 27 दिसंबर 2015 दिनांक शुक्रवार, शनिवार और रविवार आयोजित हुआ। मर्दाना जलसा गाह "मस्जिद बैतुल हुदा" के मिनारे के साथ तैयार किया गया जबकि खाना खाने का स्थान, बुक स्टाल, प्रदर्शनी, सम्मेलन के विभिन्न स्टाल्स का प्रबंधन मस्जिद बैतुल हुदा से संबद्ध ग्राउंड में किया गया था। इस जलसा में ऑस्ट्रेलिया के सारे स्टेटों के अलावा कनाडा, न्यूज़ीलैंड, सिंगापुर और अन्य कई देशों से दो हज़ार से अधिक अतिथि शामिल हुए। इसी प्रकार आदरणीय मुबारक अहमद नज़ीर साहब, मिशनरी प्रभारी जमाअत अहमदिया कनाडा भी जलसा में शामिल हुए। प्रिन्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा एक लाख से अधिक ऑस्ट्रेलियन तक जमाअत अहमदिया का परिचय पहुंचा। प्रधानमंत्री ऑस्ट्रेलिया Malcolm Turnbull के अतिरिक्त कई मंत्रियों, सदस्यों ऑफ संसद, पार्षदों और विभिन्न धार्मिक व राजनीतिक संगठनों के नेताओं ने जलसा की बधाई भिजवाई और जलसा के सफल आयोजन पर शुभकामनाएं व्यक्त कीं। विस्तृत रिपोर्ट फज़ल इंटरनेशनल लंदन 11 मार्च 2016 पृष्ठ नंबर 20 पर देखी जा सकती है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सालाना जलसा आस्ट्रेलिया के लिए कृपा करते हुए अपना संदेश भी भेजा जो अख़बार बदर के पाठकों के लाभ के लिए नीचे प्रस्तुत कर रहा है। अल्लाह तआला हम सब को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की इन सुनहरी नसीहतों और निर्देशों का पालन करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

प्रिय जमात अहमदिया आस्ट्रेलिया के मित्रो!

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह

अल्हम्दो लिल्लाह कि जमाअत अहमदिया आस्ट्रेलिया को अपना सालाना जलसा आयोजित करने की तौफीक मिल रही है। अल्लाह तआला आप के इस जलसा को प्रत्येक दृष्टि से मुबारक फरमाए और इसकी रूहानी बरकतों से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ बख़्शे। इस जलसा के अवसर पर मेरा आप को यह संदेश है कि अपने जन्म के उद्देश्य को याद रखें और फिर अल्लाह तआला की मुहब्बत में बढ़ने और तक्वा में विकास के लिए प्रयासरत रहें। मनुष्य के जन्म का उद्देश्य यह है कि वह अल्लाह की उपासना करे और इबादत के उच्च मानक स्थापित करे। अल्लाह तआला ने इबादत के जो तरीके सिखाए हैं उनमें से एक नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना है। जैसा कि अल्लाह ने कुरआन में इरशाद फ़रमाया है

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ

नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रसूल की इताअत पर प्रतिबद्ध रहो कि तुम पर दया की जाए। यह आदेश पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए है और उनके बच्चों के लिए भी जो दस साल की उम्र के हैं कि वे नमाज़ अदा करें। पुरुषों के लिए यह आदेश है कि नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने की व्यवस्था करें और मस्जिदों में जाएं और उन्हें आबाद करें और उसके फज़्ल को तलाश करें। पांचों समय नमाज़ के विषय में कोई छूट नहीं। अतः हर बैअत करने वाले को, हर अहमदी को इस स्पष्ट आदेश का पालन करना चाहिए। प्रत्येक अहमदी ख़ुद अपने लिए उपदेश करने वाला है और हर समय इस पहलू से इसे अपनी समीक्षा करते रहना चाहिए।

सय्यदना हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"नमाज़ को नियमित प्रावधान से पढ़ो। कुछ लोग एक ही समय नमाज़ पढ़ लेते हैं। याद रखें कि नमाज़ें माफ नहीं होतीं यहां तक कि पैग़म्बरों तक को नहीं हुईं। एक हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक दल आया। उन्होंने नमाज़ की माफी चाही। आपने फरमाया कि जिस धर्म में पालन नहीं वह धर्म कुछ नहीं। इसलिए इस बात को ख़ूब याद रखो और अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार अपने व्यवहार कर लो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग जिल्द 1 पृष्ठ 263)

अतः हर अहमदी को नमाज़ की स्थापना करने के लिए ध्यान देना चाहिए क्योंकि आध्यात्मिक विकास और ख़ुदा तआला की नज़दीकी पाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण माध्यम नमाज़ ही है।

दूसरी बात जिसकी ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ वह ख़िलाफत से प्रतिबद्धता है। अल्लाह तआला का आप पर बहुत बड़ा एहसान है कि उस ने आप को इस ज़माना के इमाम को पहचानने की शक्ति दी है और फिर हज़रत मसीह मौऊद को मानकर ख़िलाफत की नेअमत भी प्रदान की है और इस महान आध्यात्मिक प्रणाली के साथ जोड़ दिया है और इसके द्वारा हर जमाअत के व्यक्ति को बार बार अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की ओर ध्यान दिलाया है। आज्ञाकारिता ही एक ऐसी बात है जिससे आध्यात्मिकता प्रगति करती है। उपलब्धियां और जीत हासिल करने वाले वही लोग होते हैं जो आज्ञाकारिता का बोझ अपनी गर्दन पर पहनते हैं। परन्तु हर अहमदी जहां अपनी इबादतों की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए प्रयास करे वहां समय के ख़लीफा से व्यक्तिगत संबंध स्थापित करे और आज्ञाकारिता की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रयास करे और संघर्ष करे। इसके अतिरिक्त मैंने बार बार दुनिया के अहमदियों को इस ओर ध्यान दिलाया है कि mta पर जो कार्यक्रम आते हैं उन्हें देखें। माता पिता भी इस ओर ध्यान दें और अपनी औलाद को भी एम.टी.ए से जोड़े। यह भी एक आध्यात्मिक खाना है जो आप के आध्यात्मिक अस्तित्व का माध्यम है। इससे आप का धार्मिक ज्ञान बढ़ेगा। अध्यात्म में वृद्धि होगी और ख़िलाफत से पूर्ण संबंध पैदा होगा और दुनिया के अन्य चैनलों के ज़हरीले असर से भी सुरक्षित रहेंगे। अल्लाह तआला आप को मेरी इन नसीहतों का पालन करने की तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन।

वस्सलाम
ख़ाकसार
मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तब्लीग़ को और आप की दावत को और आप के नाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने का वादा किया है। निःसन्देह यह वादा है और यह काम अल्लाह तआला अपने वादे के अनुसार कर भी रहा है और आगे भी इंशा अल्लाह तआला करेगा लेकिन साथ ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत के लोगों को भी तब्लीग़ की ओर ध्यान दिलाया है कि मेरी किताबों से भी ज्ञान प्राप्त करो और तब्लीग़ करो जिस तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा तब्लीग़ किया करते थे।

अल्लाह तआला की कृपा से भारत में अब जमाअत का परिचय भी विभिन्न माध्यमों से हो रहा है लेकिन जो काम कर रहे हैं जो वाकफ़ीन ज़िन्दगी और मुरब्बियान हैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से भी अपने प्रयासों को तेज़ करने की ज़रूरत है। मारें भी पड़ती हैं, मुखाल्फ़तें भी होती हैं लेकिन इसके बावजूद हम ने बुद्धि से अपनी तब्लीग़ के काम को आगे बढ़ाना है इंशा अल्लाह तआला।

इस बात को दुनिया के बाकी देशों को भी अपने सामने रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने तब्लीग़ के काम करने और उसे विस्तार देने की हमें हिदायत फ़रमाई है इसके लिए मज़बूत और दृढ़ योजना की ज़रूरत है हर जगह हर देश में ताकि उससे इस काम को आगे बढ़ाया जा सके। फिर तब्लीग़ के साथ उन को संभालना भी एक बहुत बड़ा काम है जो बैअतें करके जमाअत में शामिल होते हैं। कुछ जगह तब्लीग़ तो हो जाती है लोग शामिल हो जाते हैं लेकिन फिर संभाले नहीं जाते और इस प्रकार बहुत से आए तो बर्बाद हो जाते हैं।

अफ़्रीका के देशों में भी वहां के लोगों को तब्लीग़ की कोशिश करनी चाहिए कि अपने बाद के संपर्कों में भी सुधार पैदा करें और स्थानीय लोगों की स्थिति पर नज़र रखने के लिए बेहतर योजना बनाएं।

पहली बात तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें हैं फिर इसे समझना और आगे इस से लेकर व्याख्यान तैयार करना। यह दिशा निर्देश मुबल्लिग़ों के लिए भी है और दाईन इलल्लाह के लिए भी और उन लोगों के लिए भी जो ज्ञान के मीटिंगों में जाते हैं। अगर व्याख्यान इस तरह तैयार किया गया हो तो बड़े प्रोफेसर और धर्म पर कुछ तथाकथित धर्म के विद्वान और कुछ ऐसे लोग जो धर्म पर आपत्ति भी करते हैं वे भी प्रभावित होते हैं।

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का अध्ययन भी हमारे लिए आवश्यक है ताकि हमारा धार्मिक ज्ञान भी बढ़े और इसके साथ ही इन पुस्तकों के कारण हमारे अध्यात्म में भी विकास होता है।

कुछ स्थान पर जमाअत के लोग जो हैं मुरब्बियान और मुबल्लिग़ों को इस तरह लिहाज़ नहीं करते जिस तरह रखना चाहिए और इस बारे में कई जगह से शिकायतें अब भी आती हैं लेकिन इसके साथ ही यह बात भी मैं कहूंगा कि मुरब्बियान और मुबल्लिग़ों पर यह ज़िम्मेदारी भी है और यह बात उन पर यह ज़िम्मेदारी भी डाल रही है कि उन्हें जमाअतों में अपनी गरिमा बनाए रखने के लिए बौद्धिक और आध्यात्मिक आधार पर ऊंचा स्थान प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि कभी किसी जमाअत के व्यक्ति को उनके बारे में किसी प्रकार की ग़लत बात कहने का साहस न हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस प्रकार के निशान दिखाने आए थे और ऐसे बन्दे पैदा करने आए थे जिनकी दुआओं से अल्लाह तआला दुनिया में बड़े बड़े इंकलाब पैदा कर दे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की वर्णन की हुई कुछ रिवायतों और शिक्षा प्रदत्त उपमाओं तथा घटनाओं के हवाले से जमाअत के लोगों को महत्त्वपूर्ण नसीहतें।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 8 जुलाई 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

इस समय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के हवाले से कुछ बातें प्रस्तुत करूंगा। प्रत्येक संदर्भ जो व्यक्तिगत संदर्भ है और अपने अंदर एक नसीहत और शिक्षा रखता है। कुछ बातें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में भी आपने वर्णन की हैं।

पहली बात तब्लीग़ के बारे में है जो हज़रत मुस्लेह मौऊद ने विभाजन के बाद कादियान की जमाअत को जलसा सालाना पर यह संदेश भेजा था। इसमें ध्यान दिलाया था कि आप लोगों का काम है कि तब्लीग़ करें और इस पहलू से बहुत मेहनत की ज़रूरत है। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह इल्हाम फ़रमाया था कि "मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुँचाऊँगा" (अल्हकम 22 मार्च 1898 ई जिल्द 2 नम्बर 5.6 पृष्ठ 13) और फिर यह भी फरमाया कि ख़ुदा तेरे नाम को उस दिन तक जो दुनिया कट जाए सम्मान के साथ स्थिर रखेगा और तेरी तब्लीग़ दुनिया के किनारों तक पहुंचा देगा।

(आईना कमालात इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 648)

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तब्लीग़ को और आप की दावत को और आप के नाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने का वादा किया है। निःसंदेह यह वादा है और यह काम अल्लाह तआला अपने वादे के अनुसार कर भी रहा है और आगे भी इंशा अल्लाह तआला करेगा लेकिन साथ ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत के लोगों को भी तब्लीग़ की ओर ध्यान दिलाया है कि मेरी किताबों से भी ज्ञान प्राप्त करो और तब्लीग़ करो जिस तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा तब्लीग़ किया करते थे। तो बहरहाल

अल्लाह तआला के वादों से भरपूर भाग लेने के लिए भी कोशिश करनी पड़ती है। अल्लाह तआला के वादे हैं लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें पूरा करने के लिए उन लोगों को जिन्होंने नबी के साथ बैअत का वादा किया होता है उनकी ज़िम्मेदारी भी डाली है कि इसमें बढ़ चढ़ कर भाग लें और अल्लाह तआला के फज़लों के वारिस बनें और फिर जब ऐसा होता है तो अल्लाह तआला अपने वादे के अनुसार इन कार्यों में अपार बरकत भी डालता है और नए नए माध्यम भी पैदा फरमाया है। यह हम देखते हैं कैसे अल्लाह तआला कई माध्यम तब्लीग़ के पैदा फरमाए।

तो बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के संदेश का वह हिस्सा प्रस्तुत कर देता हूं। जो तब्लीग़ के बारे में था। इसमें कादियान में अहमदियों की थोड़ी संख्या और सीमित संसाधनों के रह जाने के बावजूद इस महत्त्वपूर्ण कर्तव्य की ओर आपने ध्यान दिलाया है और दरवेशों को प्रोत्साहित भी किया और उन्हें हौसला दिलाने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रारंभिक ज़माना का हवाला दिया। आप उन्हें संबोधित करके फरमाते हैं कि “वास्तव में आप की संख्या कादियान में तीन सौ तेरह है, लेकिन आप इस बात को नहीं भूले होंगे कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कादियान में ख़ुदा तआला के बताए हुए काम को शुरू किया था उस समय कादियान में अहमदियों की संख्या केवल दो तीन थी। तीन सौ आदमी निश्चय ही तीन से अधिक होते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे के समय कादियान की आबादी ग्यारह सौ थी। ग्यारह सौ और तीन की तुलना 1/366 है की होती है। (अर्थात एक के मुकाबला पर तीन सौ छयासठ व्यक्ति।) अगर इस समय (जब आप यह संदेश आप भेज रहे हैं।) कादियान की आबादी बारह हज़ार समझी जाए तो मौजूदा अहमदिया आबादी की तुलना में बाकी कादियान के लोगों से 1/36 होती है। (अर्थात कि छत्तीस के मुकाबला पर और पहले एक अहमदी तीन सौ छियासठ के मुकाबला पर था। आप कादियान वालों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि) मानो जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने काम शुरू किया उस (समय) से आप की शक्ति दस गुना अधिक है। फिर जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने काम शुरू किया उस समय कादियान से बाहर कोई अहमदिया जमाअत नहीं थी लेकिन अब भारत में भी कई स्थानों पर अहमदिया जमाअत स्थापित हैं। इन जमाअतों को जागरूक करना, व्यवस्थित करना, एक नई प्रतिबद्धता के साथ खड़ा करना और इस इरादे के साथ उनकी शक्तियों को इकट्ठा करना कि वे इस्लाम और अहमदियत की तब्लीग़ को भारत के चारों कोनों में फैला दें यह आप लोगों का ही काम है।”

(सवानेह फज़ले उमर भाग 4 पृष्ठ 388-389)

यही तुलना शायद आजकल की कादियान की आबादी की हो। अगर अहमदी हज़ारों में हैं तो वहां दूसरों की भी संख्या बढ़ी होगी और अब तो संसाधन भी पहले से काफी बेहतर हैं और भी हमारे माध्यम अल्लाह तआला की कृपा से बहुत अधिक हैं। अल्लाह तआला की कृपा से भारत में अब जमाअत का परिचय भी विभिन्न माध्यमों से हो रहा है लेकिन जो वाकफ़ीन ज़िन्दगी और मुरब्बियान काम कर रहे हैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से भी अपने प्रयासों को तेज़ करने की ज़रूरत है। मारें भी पड़ती हैं, मुखाल्फ़तें भी होती हैं लेकिन इसके बावजूद हम ने बुद्धि से अपनी तब्लीग़ के काम को आगे बढ़ाना है। इंशा अल्लाह तआला।

इस बात को दुनिया के बाकी देशों को भी अपने सामने रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने तब्लीग़ के काम करने और उसे विस्तार देने की हमें हिदायत फरमाई है। यह कुरआन शरीफ का भी आदेश है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी यही फरमाया है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यही हुक्म दिया था लेकिन हमें इसके लिए हर जगह हर देश में मज़बूत और दृढ़ योजना की ज़रूरत है। ताकि उससे इस काम को आगे बढ़ाया जा सके और फिर तब्लीग़ के साथ उन को संभालना भी एक बहुत बड़ा काम है जो बैअतें करके जमाअत में शामिल होते हैं। कुछ जगह तब्लीग़ तो हो जाती है लोग शामिल हो जाते हैं लेकिन फिर संभाले नहीं जाते और इस प्रकार बहुत से आए फिर बर्बाद हो जाते हैं।

भारत में अधिकतर ग्रामीण लोग ग़रीब लोग अहमदियत को स्वीकार करते हैं और जब विरोधी हमला करते हैं तो कुछ कमज़ोर ईमान वाले भय से कमज़ोरी भी दिखा देते हैं। अगर वहाँ हमारा प्रशासन, काम करने वाले, योजना करने वाले जिस तरह तब्लीग़ के कार्यों की योजना करते हैं और अल्लाह तआला की कृपा से बड़ा अच्छा काम हो रहा है। इस के अतिरिक्त नज़ारत इस्लाहो इर्शाद जो है उनका वहाँ एक विभाग, नूर इस्लाम भी काम कर रहा है। जिस के विभिन्न माध्यम हैं फोन के माध्यम से और दूसरे अख़बारों के माध्यम से तब्लीग़ का काम कर रहे हैं। इसी तरह वक्फ जदीद की तब्लीग़ की नज़ामत है। इन के द्वारा भी काम हो रहा है उन्हें ऐसी जगहों पर जहां विरोधी पहुंच कर नए अहमदियों को कष्ट पहुंचाने की कोशिश करते हैं वहां जाकर उनकी नए अहमदियों को प्रोत्साहित करना चाहिए। ज़िला और केंद्रीय प्रतिनिधियों को वहां तुरंत पहुंचना चाहिए। जहां से भी सूचना मिले कि यहां किसी भी प्रकार को भी तकलीफ मिली है किसी अहमदी को चाहे वह छोटा सा गांव ही हो।

इसी तरह अफ्रीका के देशों में भी वहां के लोगों को तब्लीग़ की कोशिश करनी चाहिए कि अपने बाद के संपर्कों में भी सुधार पैदा करें और स्थानीय लोगों की स्थिति पर नज़र रखने के लिए बेहतर योजना बनाएं। क्योंकि वहाँ भी जैसा कि मैंने उल्लेख किया था दर्स में भी शायद और ख़ुत्बा में कि अहमदियत के विरोधी तुरंत पहुंचते हैं कि कैसे हम उन्हें अहमदियत से दूर करें। तो बहरहाल यह एक काम है हर जगह उनमें करने वाला है विशेष रूप से जहां अधिक बैअतें होती हैं और ग़रीब देश हैं।

फिर एक घटना हज़रत मुस्लेह मौऊद बयान करते हैं जो ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब से संबंधित है जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी लेकिन फिर ख़िलाफत सानिया के चयन के समय फित्ना का शिकार बन गए और ग़ैर मुबाईन के नेताओं में से हो गए। बहरहाल उन्हें लीडरी चाहिए थी वह उन्हें वहाँ मिल गई। उनके बारे में बयान फरमाते हुए कि उन्होंने अपने ज्ञान को कैसे बढ़ाया था और उनके अच्छे लेक्चरों और भाषणों का राज़ किया था। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब की सफलता की बड़ी वजह यही थी कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें अध्ययन करके एक लेक्चर तैयार करते थे। फिर कादियान आकर कुछ हज़रत ख़लीफा अव्वल से पूछा और कुछ अन्य लोगों से और इस तरह एक लेक्चर पूरा कर लेते। फिर उसे लेकर भारत के विभिन्न शहरों का दौरा करते और ख़ूब सफल होते।” हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि “ख्वाजा साहिब कहा करते थे कि अगर बारह लेक्चर आदमी के पास तैयार हो जाएं तो उसकी असाधारण प्रतिष्ठा हो सकती है।” आप कहते हैं कि “ख्वाजा साहिब ने अभी सात लेक्चर तैयार किए थे कि विलायत चले गए। (यहाँ इंग्लैण्ड आ गए।) लेकिन वह इन सात लेक्चरों से ही बहुत लोकप्रिय हो चुके थे।” हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि “मैं समझता हूँ कि अगर एक लेक्चर भी अच्छी तरह तैयार कर लिया जाए तो चूंकि वह ख़ूब याद है इसलिए लोगों पर इसका अच्छा असर हो सकता है।”

अत: पहली बात तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें हैं जिन को पढ़ना ज़रूरी है। फिर इसे समझना और आगे इससे लेक्चर तैयार करना। हज़रत मुस्लेह मौऊद विस्तार से वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि “पहले समय में इसी तरह होता था कि “सर्फ मीर” का अलग शिक्षक होता था “नहू मीर” का अलग शिक्षक होता था। “पक्की रोटी” का अलग शिक्षक होता था और “कच्ची रोटी” का अलग शिक्षक था। (अब एक समय फिर से आ गया है जहां विज्ञान ने प्रगति की है तो फिर यह विशेषज्ञता और specialities, specialisation का ज़माना शुरू हो चुका है।) आप फरमाते हैं कि चाहिए भी इसी तरह कि लेक्चरार हों उन्हें लेख ख़ूब तैयार कर दिए जाएं और वह बाहर जाकर वही लेक्चर दें। इसका नतीजा यह होगा कि सिलसिले के उद्देश्य के अनुसार भाषण होंगे और हमें यहाँ बैठे बैठे पता होगा कि उन्होंने किया बोलना है। मूल लेक्चर वही होंगे इसके अतिरिक्त अगर साथ में लेक्चरों के रूप में स्थानीय ज़रूरत है तो वह कुछ किसी विषय पर भी बोल सकते हैं।” (अल्फज़ल 7 नवम्बर 1945 ई जिल्द नम्बर 33 पृष्ठ 3)

तो यह दिशा निर्देश मुबल्लिग़ों के लिए भी है और दाईन इलल्लाह के लिए भी और उन लोगों के लिए भी जो ज्ञान के मीटिंगों में जाते हैं। अगर लेक्चर इस तरह तैयार किया गया हो तो बड़े बड़े प्रोफेसर और कुछ तथाकथित धर्म के विद्वान और कुछ ऐसे लोग जो धर्म पर आपत्ति भी करते हैं वे भी प्रभावित होते हैं। पिछले दिनों यहां भी शायद तब्लीग़ विभाग के अधीन एक कार्यक्रम था। जिसमें इस्राईल से एक बड़े यहूदी प्रोफेसर शामिल हुए थे। वह कई पुस्तकों के लेखक हैं। इसमें हमारे एक युवा मुरब्बी ने भी अच्छी तैयारी करके लेक्चर दिया था। प्रोफेसर साहिब इससे बड़े प्रभावित हुए थे। वहां प्रोफेसर साहिब ने बड़ी होशियारी से इस्लाम के विरुद्ध, ख़िलाफत के पक्ष में कुछ बातें कीं लेकिन इस्लाम के ख़िलाफ भी कहा तो हमारे इस युवक ने बड़े अच्छे रंग में जवाब दिया। बाद में प्रोफेसर साहिब मुझे मिलने यहां भी आए और कहने लगे कि तुम्हारा वह मुरब्बी वह लेक्चरार जो था बड़ा चालाक है। वास्तव में तो इस्लाम पर हमला करने वाले लोग, ग़ैर अहमदी स्कालरों के सामने कुछ बातें करके उन के तर्क रद्द कर देते हैं या उनके पास वह तर्क नहीं लेकिन जमाअत के पास तो अल्लाह तआला की कृपा से हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम का दिया हुआ ज्ञान इतना है कि अगर अच्छी तैयारी हो किसी का भी मुंह बंद किया जा सकता है। उनके सामने कोई ठहर नहीं सकता।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का अध्ययन भी हमारे लिए आवश्यक है ताकि हमारा धार्मिक ज्ञान भी बढ़े और इसके साथ ही इन पुस्तकों के कारण हमारे अध्यात्म में भी विकास होता है।

पुराने लोगों में कितना तब्लीग़ का शौक था इस का उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद एक जगह फरमाते हैं कि "मैं छोटा था कि मैंने बचपन के कुछ दोस्तों के साथ मिलकर एक अंजुमन बनाई और रिसाला "तशहीज़ुल अज़हान" हम ने आरम्भ किया। फिर फरमाते हैं कि मेरे इस समय दोस्तों में एक फतह मुहम्मद साहिब सयाल भी थे। (जो बाद में यहाँ यू.के में मुबल्लिग़ रहे हैं।) आप फ़रमाते हैं इनकी लड़की चौधरी अब्दुल्ला खान साहिब के घर है(चौधरी अब्दुल्लाह साहिब से ब्याही हुई थी। चौधरी अब्दुल्लह ख़ान, चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान के छोटे भाई थे।) कहते हैं एक बार चौधरी अब्दुल्लाह ख़ान की पत्नी मुझे कहने लगी कि अब्बा जी को(यानी चौधरी फतह मुहम्मद साहिब सयाल को) जब आप ने नाज़िर आला बना दिया। (एक समय में वहाँ सदर अंजुमन अहमदिया के नाज़िर आला भी बनाए गए थे।) तो वह घर में बड़ा अफसोस किया करते थे कि हमने तो अपने आप को तब्लीग़ करने के लिए समर्पित किया था और उन्होंने हमें कुर्सियों पर लाकर बिठा दिया है। (हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं) दूसरी ओर मैं देखता हों कि हमारी जमाअत में वे लोग भी हैं जो मुझे लिखते हैं कि वाक्फे ज़िन्दगी का सम्मान होना चाहिए।"

(अल्फज़ल 22 अक्तूबर 1955 ई जिल्द 44/9 नम्बर 247 पृष्ठ 6)

इसलिए इसमें यह शिक्षा भी है कि पुराने ज़माने के लोगों को तब्लीग़ का कितना शौक था और उसे दफतरों में तैनाती पर वे प्राथमिकता दिया करते थे। आजकल यहाँ कई बार ऐसा होता है कुछ लोग कहते हैं कि हमें केंद्र में लगा दिया जाए।

इसके अलावा यह बात भी याद रखनी चाहिए कि मुरब्बियान और मुबल्लिग़ों को जमाअतों को जिस तरह देखना चाहिए वह इस तरह कई जगह पर नहीं देखे जाते अर्थात जमाअत के लोग जो हैं अपने मुरब्बियान और मुबल्लिग़ों को इस तरह लिहाज़ नहीं करते जिस तरह रखना चाहिए और इस बारे में अब भी कई जगह से शिकायतें आती हैं लेकिन इसके साथ ही यह बात भी मैं कहूंगा कि मुरब्बियान और मुबल्लिग़ों पर यह ज़िम्मेदारी भी है कि उन्हें जमाअतों में अपनी गरिमा बनाए रखने के लिए बौद्धिक और आध्यात्मिक स्तर पर ऊंचा स्थान प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि कभी किसी जमाअत के व्यक्ति को उनके बारे में किसी प्रकार की ग़लत बात कहने का साहस न हो। कई जगह कुछ प्रशासनिक लोग मुरब्बियों के बारे में ग़लत बातें कर जाते हैं। जहां मुरब्बी सुधार करने की कोशिश करता है वहां उसके विरुद्ध बातें करना शुरू कर देते हैं।

फिर दुआ की स्वीकृति का राज़ क्या है और इस बारे में इस की हिक्मत को बताते हुए आप फरमाते हैं कि "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस प्रकार के निशान दिखाने आए थे और ऐसे बन्दे पैदा करने आए थे जिनकी दुआओं से अल्लाह तआला दुनिया में बड़े बड़े इंकलाब पैदा कर दे। आप ने (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने) फरमाया है कि

चूं पेश आं बरवी कार यक दुआ बाशद

इसका अर्थ यही है कि जो सारी दुनिया नहीं कर सकती वह एक दुआ से हो जाता है लेकिन इसके यह अर्थ नहीं कि अल्लाह तआला हर दुआ को ज़रूर स्वीकार कर लेता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बटे साहिबज़ादा मुबारक अहमद मर गए। मौलवी अब्दुल करीम साहिब मर गए। आप ने दुआएं भी कीं मगर वह मर गए और यह भी एक निशान है क्योंकि मिर्ज़ा मुबारक अहमद साहिब के बारे में आप ने समय से पहले बता दिया था और जब कोई बात समय से पूर्व कह दी जाती है तो वह निशान बन जाती है। इसलिए न तो यह होता है कि हर दुआ स्वीकार हो जाती है और न ही हर अस्वीकार होती है। हां जो दुआ स्वीकार करने का अल्लाह तआला फैसला करे वह ज़रूर स्वीकार होती है उसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता।

फिर दुआओं की स्वीकृति की बात करते हुए पैग़ामियों के हज़रत मुस्लेह मौऊद पर एक आरोप का जवाब देते हुए आपने फरमाया कि उन्होंने आपत्ति की थी क्या चिन्ह पूरे हुए। फरमाया कि "अल्लाह तआला के अनुग्रह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा नाज़िल हुए उनका जारी रहना ज़रूरी है। पैग़ामियों का अधिकार तो है कि कह दें कि तुम्हारे द्वारा जारी नहीं हो सकते। (अर्थात हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी के बारे में कह सकते हैं और कहते हैं मेरे बारे में यह कह दो कि मेरे द्वारा यह जारी नहीं हो सकते) लेकिन यह ज़रूरी है कि वह मेरी तुलना में अपने इमाम या नेता को पेश करें और कहें कि इसके द्वारा इन फज़्लों का प्रदर्शन होता है। और अगर वास्तव में ख़ुदा तआला उसके द्वारा भविष्य के मामलों के बारे में ख़बरें प्रदर्शित करेगा और उसकी दुआ असामान्य रूप से सुने तो हम मान लेंगे कि हम यद्यपि ग़लत थे लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता साबित है। (ऐसी आपत्ति न करो जिस से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता पर आरोप आता हो। तुम एक ओर मानते हो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने भेजा। चाहे मानते हो कि वह मुजद्दिद के रूप में थे। मानते हो कि सच्चे थे और उनकी दुआएं भी स्वीकार होती थीं उन्होंने भविष्यवाणियां भी कीं। तो पहली बात तो यह है कि अगर मेरी बात नहीं माननी तो न मानो। एक तो अपने किसी इमाम को तो मेरे सामने पेश करो और फिर यह साबित करो कि उस की दुआएं स्वीकार की जाती हैं और अगर साबित कर देते हो उस की दुआएँ स्वीकार होती हैं तो हमें मानने पर कोई आपत्ति नहीं होगी कि ठीक है कि हम ग़लत हैं लेकिन अगर तुम यह कहो निशान पूरे नहीं हो रहे तो यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता पर भी तुम आपत्ति कर रहे हो। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं लेकिन इन लोगों का तो यह हाल है कि यह तो दरवाज़ा ही बंद कर देते हैं। (अल्फज़ल 12 जुलाई 1940 ई जिल्द 28 नम्बर 157 पृष्ठ 6) कोई बात सुनना ही नहीं चाहते कोई बुद्धि की बात करना ही नहीं चाहते।

कुछ छोटी छोटी अन्य घटनाएं हैं, उदाहरण हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में जो आपने वर्णन कीं।

इस में से एक कुबड़ी का उदाहरण है। फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक कुबड़ी का उदाहरण सुनाया करते थे। (उस की कमर पर कुब निकला हुआ था।) कि उससे किसी ने पूछा कि क्या तू यह चाहती है कि तेरी कमर सीधी हो जाए या बाकी लोग भी कुबड़े हो जाएं। ? तो जैसा कि कुछ तबीयतें ज़िद्दी होती हैं। (ईर्ष्या भी रखती हैं।) उस ने आगे से यह जवाब दिया कि ज़माना गुज़र गिया। मैं कुबड़ी ही रही और लोग मेरे कुबड़े पन पर हंसी और मज़ाक करते रहे। अब तो यह सीधा होने से रहा। (कुब मेरा तो जो है यह तो ऐसा ही रहना है। अब तो मैं बूढ़ी हो गई।) मज़ा तो जब कि ये लोग सारे भी कुबड़े हो जाएं और मैं भी उन पर हंस कर जी ठंडा करूं।" तो आप कहते हैं कि "इस तरह की कुछ द्वेष करने वाली तबीयतें होती हैं। (ईर्ष्या करने वाली तबीयतें होती हैं।) उन का यह उद्देश्य नहीं होता कि उनकी तकलीफ दूर हो बल्कि वह यह चाहते हैं कि दूसरा तकलीफ से पीड़ित हो जाए।

(अल्फज़ल 2 अगस्त 1961 ई जिल्द 5/15 नम्बर 157 पृष्ठ 5)

इसलिए ऐसे हासदों से बचने की भी हमें हर एक को दुआ करनी चाहिए और यह भी दुआ करनी चाहिए कि हम भी कभी ऐसे हासदों में गिने जांए जो इस प्रकार की बातें करने वाले हों।

फिर एक अंधे की कहावत वर्णन फरमाते हुए आपने फरमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुनाया करते थे कि कोई अंधा था जो रात के समय किसी दूसरे से बातें कर रहा था और एक व्यक्ति की नींद ख़राब हो रही थी। वह कहने लगा हाफिज़ जी सो जाओ। हाफिज़ साहिब कहने लगे हमारा सोना क्या है। चुप ही हो जाना है। मतलब यह था कि सोना आँखें बंद करने और चुप हो जाने का नाम होता है। मेरी आँखें तो पहले ही बंद हैं अब चुप ही हो जाना है और क्या है?" (तो मैं हो जाता हूं।) तो आप फरमाते हैं कि "मोमिन के लिए यह स्थिति (जो असुविधा की होती हैं यह) दर्द का कारण नहीं हो सकती क्योंकि वह कहता है कि मैं तो पहले ही इन स्थितियों का आदी हूँ। जैसे मोमिन को दुनिया मारना चाहती है तो कहता है मुझे मार कर किया लोगे मैं तो पहले ही ख़ुदा तआला के लिए मरा हुआ हूँ। (इस बात पर तैयार हूँ कि जो अल्लाह तआला चाहे मैं करूँगा।) इसके लिए मेरी जान भी हाज़िर है।) आप फरमाते हैं कि "दुनिया मौत से घबराती है मगर एक मोमिन को जब दुनिया मारना चाहती है तो वह कुछ भी नहीं घबराता और कहता है कि मैं तो उसी दिन मर गया था। जिस दिन मैंने इस्लाम स्वीकार किया था। अन्तर केवल यह था कि आगे चलता फिरता मृत था और अब तुम मुझे ज़मीन के नीचे दफन कर दोगे मेरे लिए कोई अधिक अंतर नहीं होगा।"(अल्फज़ल 23 मई 1943 ई जिल्द 31 नम्बर 122 पृष्ठ 6) तो वास्तविक मोमिन की यह सोच होती है।

फिर एक उदाहरण आप देते हैं। फरमाते हैं कि "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुनाया करते थे कि एक महिला किसी शादी में शामिल हुई। वह कंजूस औरत थी लेकिन इस की भौजाई हौसले वाली थी। (ननद भाभी दोनों शादी में शामिल हुए। वह तो कंजूस थी लेकिन भाभी उसकी ज़रा हौसले वाली थी। हौसले से अभिप्राय तोहफा देने में हौसला रखती थी।) इस औरत ने इस शादी पर एक रुपए

का तोहफा दिया मगर उसकी भौजाई ने बीस रुपए का। जब वह वापस आई तो किसी ने इस कंजूस महिला से पूछा कि तुम ने शादी के मौके पर क्या खर्च किया तो उसने कहा कि मैंने और भौजाई ने इक्कीस रुपए दिए। (इसका उदाहरण चन्दों पर आधारित करते हुए आप फरमाते हैं कि)कुछ जमाअतों में कुछ लोग हैं वे बहुत बढ़ चढ़ कर चंदा देते हैं उनके विशेष चन्दों को जमाअतों को अपनी ओर सम्बन्धित कर लेना ऐसा ही है जैसे कंजूस औरत का यह कहना कि मैंने और भौजाई ने इक्कीस रुपए दिए थे। (अल्फज़ल 15 जून 1944 ई जिल्द 32 नम्बर 138 पृष्ठ 4)

लेकिन कुछ ऐसे भी अमीर लोग हैं जो कंजूस होते हैं और जमाअतों के कुल चंदे को अपनी ओर संबन्धित कर लेते हैं। यह भी उदाहरण सामने आते हैं अगर अपनी ओर सम्बन्धित नहीं करते तो व्यक्त ज़रूर करते हैं कि जैसे कि हमारी जमाअत ने इतना दिया। जैसे हमारी जमाअत में सबसे बढ़ के वही चंदा देने वाले थे। हालांकि बहुमत उनमें से वह होता है जो ग़रीब हैं जिन्होंने चंदा दिया और अमीर इस तुलना से नहीं दे रहे होते।

एक बार खेल में कुछ ग़लत बातें हुईं। धर्म का ख्याल नहीं रखा गया। सिलसिले की परंपराओं का ख्याल नहीं रखा गया। उस पर चेतावनी देते हुए आप ने उन्हें फरमाया कि "देखो हंसी और मज़ाक़ करने की अनुमति है। (मना नहीं है।) नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी मज़ाक़ करते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी मज़ाक़ करते थे। हम भी मज़ाक़ कर लेते हैं। हम यह नहीं कहते कि हम मज़ाक़ नहीं करते। हम सौ बार मज़ाक़ करते हैं लेकिन अपने बच्चों से करते हैं। अपनी पत्नियों से करते हैं। करीबियों से करते हैं लेकिन इस तरह नहीं कि इसमें किसी के अपमान का रंग हो। (अगर किसी को हीन किया जा रहा हो उसका आत्म सम्मान प्रभावित हो रहा हो तो ऐसा मज़ाक़ सही नहीं।) अगर मुंह से ऐसी बात निकल जाए जिसमें अपमान का रंग पाया जाता है तो हम इस्तिग़फ़ार करते हैं (और यह प्रत्येक को करना चाहिए। अगर किसी को ग़लती से किसी का मज़ाक़ ऐसे रंग में किया जो उसे बहुत बुरा लगे या उसका आत्म सम्मान आहत होता हो) और समझते हैं कि हमसे ग़लती हो गई। (इसलिए इस्तिग़फार करना चाहिए। तो एक खेल का हवाला देते हुए आपने फरमाया कि वहां यह खेल हो रहा था। इस लिहाज से इसमें एक बात हुई। फरमाते हैं कि मैं खेल को बुरा नहीं मानता। हंसना खेलना वैध है मैं यह नहीं कहता कि वैध नहीं है।) तुम निसंदेह हँसो और खेलो लेकिन "बाज़ी बाज़ी बारेश बाबा हम बाज़ी।" अर्थात खेल है तो ठीक है लेकिन अगर पिता की दाढ़ी से भी खेला जाए तो यह उचित नहीं। (अर्थात कि अपने पिता की भी इज्ज़त उछालने लागो तो यह वैध नहीं है।) ख़ुदा तआला का स्थान ख़ुदा तआला को दो। फुटबाल का स्थान फुटबाल दो। मुशायरा का स्थान मुशायरा को दो और पेशगोईयों का स्थान पेशगोईयों दो। (कुछ ने ऐसी बातें कीं जिस से मज़ाक़ के रंग में या उपहास के रंग में पेशगोईयों के हवाले देने शुरू कर दिए।) फरमाया "अगर तुम्हें खेल और उपहास का शौक हो तो लाहौर जाओ और मुशायरों में जाकर शामिल हो जाओ। (वहाँ कुछ कवि एक दूसरे का उपहास भी उड़ा लेते हैं। मुशायरों में शामिल हो लो अपना शौक पूरा कर लो। व्यर्थ बातें करनी हैं खेल में शामिल होना है तो जाओ दूसरे शहर में जा कर शामिल हो जाओ।) अगर तुम लाहौर जाकर ऐसा करोगे (खासकर कादियान के लोगों को आप नसीहत फरमा रहे थे और रबवा तथा कादियान अब जहां भी केंद्रीय रूप में जो भी जमाअत के कार्यक्रम के अधीन खेलों का प्रबंध हो रहा हो उनके लिए भी यह नसीहत है कि वहां जाकर ऐसा करोगे) तो लोग यही कहेंगे कि लाहौर वालों ने ऐसा किया। यह नहीं कहेंगे कि अहमदियों ने ऐसा किया लेकिन यहाँ यह दसवां हिस्सा भी करोगे तो लोग कहेंगे कि अहमदियों ने ऐसा किया। अतः मैं तुम्हें हंसी से नहीं रोकता मैं यह कहता हूँ कि हँसी में इस हद तक न बढ़ो जिसमें जमाअत की बदनामी हो।

(अल्फज़ल 12 मार्च 1952 ई जिल्द 40/6 नम्बर 62 पृष्ठ 4)

अब केवल कादियान या रबवा की बात नहीं है दुनिया में हर जगह सिर्फ जमाअत के रूप में ही खेलें होती हैं। जमाअत के द्वारा आरगनाईज़ होती है वहाँ अगर कोई ऐसी बातें होंगी तो जमाअत कई बार बदनाम होती है। इसलिए हर जगह इन बातों पर ध्यान देना चाहिए।

इसलिए हमारे हर कर्म में इस बात की अभिव्यक्ति होनी चाहिए चाहे खेलकूद या मनोरंजन या मुशायरा हैं कि हम ने जमाअत की प्रतिष्ठा को धूमिल नहीं होने देना। इस के सम्मान का हमेशा ख्याल रखना है। अपनी प्रतिष्ठा का हमेशा ख्याल रखना है। तो यह जो कुछ बातें मैंने कही हैं नसीहत थीं। शिक्षाप्रद थीं। इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फर्माया कि अगर मैं सच हूँ तो मस्जिद तुम को मिल जाएगी।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला फरमाते हैं

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक बार कपूरथला के अहमदियों और ग़ैर अहमदियों का वहां की एक मस्जिद के बारे में मुकदमा हो गया। जिस जज के पास यह मामला था उसने विरोधी रवैया इख़तेयार करना शुरू कर दिया। इस पर कपूरथला की जमाअत ने घबरा कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दुआ के लिए लिखा । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसके जवाब में उन्हें फर्माया कि अगर मैं सच हूँ तो मस्जिद तुम को मिल जाए गी। मगर दूसरी ओर न्यायाधीश ने अपना विरोध जारी रखी और आख़िर उसने अहमदियों के खिलाफ फैसला लिख दिया। मगर दूसरे दिन जब वह फैसला सुनाने के लिए अदालत में जाने की तैयारी करने लगा तो इस ने नौकर से कहा । मुझे बूट पहना दो। नौकर ने एक बूट पहनाया दूसरे अभी पहना ही रहा था कि खट की आवाज़ आई। उसने ऊपर देखा । तो जज का हार्ट फेल हो चुका था। उस के मरने के बाद दूसरे जज को नियुक्त किया गिया। और उस पहले निर्णय को बदल कर हमारी जमाअत के पक्ष में फैसला दिया । जो दोस्तों के लिए एक बहुत बड़ा निशान साबित हुआ और उन के ईमान आसमान तक जा पहुँचे।

सारांक्ष यह कि अल्लाह तआला की यह सुन्नत है कि वे अपने नबियों के द्वारा निरंतर ग़ेब के समाचार देता है । जिन के पूरा होने पर मोमिनों के विश्वास और भी उन्नति कर जाते हैं। यह अनदेखी की खबरों का ही नतीजा था कि जो लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह परईमान लाए उनके दिल इतने मजबूत हो गए कि और लोग तो मृत्यु को देखकर रोते हैं मगर सहाबा में से किसी को जब ख़ुदा तआला के रास्ते में जान देने का अवसर मिलता तो वह खुशी से उछल पड़ता। और कहता फुज़्तो व रब्बिलकअबते काबा के रब्ब की कसम ! मैं कामयाब हो गया। आख़िर यह भावना उनके अंदर कहा से आ गई थी। यह वही रूह थी जो अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ग़ैब की ख़बर बता बता कर मोमिनों के अंदर भर दी थी। अगर उन पर ग़ैब का प्रकटन न होता तो वह इस उच्च स्थान पर कभी खड़े न होते जिस पर मुसलमान पहुँचे। अतः यह दोनों बातें अपनी जगह मनुष्य के लिए लाभ के लिए हैं । ग़ैब भी अपनी जगह फायदा देने वाला और इनकशाफे ग़ैब भी अपनी जगह लाभ देने वाला है। सारे आनन्द ग़ैब के साथ हैं और सारी आध्यात्मिकता ग़ैब के खुलने के साथ जुड़ी है।"

(तफ़सीरे कबीर भाग 7 पृष्ठ 67)

हवा के दोश पे रक्खे हुए चराग़ हैं हम

उबैदुल्लाह अलीम

खयालो-ख्वाब हुई हैं मुहब्बतें कैसी
लहू में नाच रही हैं ये वहशतें कैसी
न शब् को चाँद ही अच्छा न दिन को मेह्र अच्छा
ये हम पे बीत रही हैं क़यामतें कैसी
वो साथ था तो खुदा भी था मेहरबाँ क्या क्या
बिछड़ गया तो हुई हैं अदावतें कैसी
हवा के दोश पे रक्खे हुए च्राग हैं हम
जो बुझ गए तो हवा से शिकायतें कैसी
जो बे-ख़बर कोई गुज़र तो ये सदा दी है
मैं संगे-राह हूँ, मुझ पर इनायतें कैसी
नहीं कि हुस्न ही नैरंगियों में ताक़ नहीं
जुनूँ भी खेल रहा है सियासतें कैसी
ये दौरे-बे-हुनरां है बचा रखो ख़ुद को
यहाँ सदाक़तें कैसी, करामतें कैसी
अज़ाब जिन का तबस्सुम सवाब जिन की निगाह
खिंची हुई हैं पस-ए-जानाँ सूरतें कैसी
हवा के दोश पे रक्खे हुए चराग़ हैं हम
जो बुझ गये तो हवा से शिकायतें कैसी
जो बेख़बर कोई गुज़रा तो सदा ये दी है
मैं संग-ए-राह हूँ मुझ पर इनायतें कैसी

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चिन्तन का अन्दाज़, हिकमत की बातें,पवित्र उपदेश,उच्चतम आदर्श

संकलन कर्ता:- प्रोफेसर मुहम्मद असलम सज्जाद साहिब

(अनुवादक:-शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

1. जमाअत के लोगों से प्रेम और सहानुभुति की भावना

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फर्माते हैं कि:- "मेरी यह हालत है कि जिस तरह एक चरवाहा अपनी बकरीयों को प्रेम और सहानुभुति से चराता है कि अगर कोई बकरी लंगड़ी हो या अभी बच्चा हो तो दयाभाव से एसा प्रबंध करता है कि......कभी-कभी अपने कंधे पर उठा लेता है। अगर दो बकरीयां लड़ें तो कोशिश करता है कि लड़ाई से दूर रहें तो ऐसा ही अपनी जमाअत के लिए मेरा विचार है। चाहिए कि अच्छे बुरों पर रहम करें और उनके लिए दुआ करें कि वे भी नेक और विनम्र हो जाएं। चाहिए कि एक भाई दुसरे भाई का गुनाह माफ कर दे।"

(अलफज़ल 20,जनवरी-2001 ई.)

2. गरीबों से प्रेम और सद् व्यवहार

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने सेवकों के साथ गोल कमरे में खाना खा रहे थे। एक व्यक्ति बीच में ऐसा था कि इसके कपड़े बिलकुल मैले और फटे हुए थे। एक अमीर और अच्छे कपड़े पहने हुए व्यक्ति ने उसे धीरे से कोहनी से दबाया और कहा कि पीछे रहो। फिर खा लेना। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने देख लिया। आप ने खड़े होकर तकरीर की कि हमारी जमाअत ग़रीबों की जमाअत है और हर नबी की जमाअत ग़रीबों से ही उन्नित करती रही है।" अगर किसी अमीर मित्र को कोई ग़रीब बुरा लगता हो या उस से घृणा आए तो उसे चाहिए कि स्वयं अलग हो जाए"

(अलफज़ल 23,अप्रैल-1998 ई.)

3.लाभदायक अस्तित्व (वजूद)

1900 या 1901 ई. की घटना है। एक नबाव साहिब हज़रत खलीफतुलमसीह अव्वल (प्रथम) के पास ईलाज के लिए कादियान आए हुए थे। जिन के लिए एक अलग मकान था। एक दिन नबाव साहिब के नौकर हज़रत मौलवी साहिब के पास आए जिन में एक मुस्लमान और एक सिख था और निवेदन किया कि नबाव साहिब के गांव में लाट साहिब आने वाले हैं आप उन लोगों के संबध को जानते हैं इसलिए नबाव साहिब की इच्छा है कि आप उनके साथ चल पड़ें। हज़रत मौलवी साहिब ने फर्माया कि मैं अपनी जान का मालिक नहीं हूं। मेरा एक आका है अगर वह मुझे भेज दे तो मुझे क्या इन्कार ? फिर ज़ुहर के समय वे सेवक बैतु ज़िक्र में बैठ गए। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए तो उन्होंने सारी बात बताई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फर्माया:- "इस में सन्देह नहीं कि अगर हम मौलवी साहिब को आग में कूदने या पानी में छलांग लगाने के लिए कहें तो वह इन्कार न करेंगे लेकिन मौलवी साहिब से यहां हज़ारों लोगों को हर समय लाभ पहुंचता है। क़ुरआन व हदीस के दर्स पढ़ाते हैं इस के अतिरिक्त सैंकड़ों रोगीयों का प्रतिदिन ईलाज करते हैं। एक संसारिक कार्य के लिए हम इतना लाभ बंद नहीं कर सकते।"

(अलफज़ल 27,अगस्त-1998 ई.)

4.अतिथि-सत्कार

एक मेहमान ने आकर कहा कि बिस्तर नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हाफिज़ हामिद अली को कहा कि रज़ाई इस को दे दो। हाफिज़ हामिद अली साहिब ने कहा कि बहुत सी रज़ाईयां इसी तरह चोरी हो गई हैं। यह व्यक्ति भी रज़ाई ले जाएगा। तो हज़ूर अलैहिस्सलाम ने कहा कि:- "अगर यह रज़ाई ले गया तो इसका गुनाह होगा और अगर बिना रज़ाई के ठण्ड से मर गया तो हमारा गुनाह होगा।" (अलफज़ल 17,दिसम्बर-1999 ई.)

5. ज्ञान प्राप्ति का उद्धेश्य

हज़रत साहिबज़ादा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब इन्ट्रेंस की परीक्षा देकर अमृतसर से वापिस आए हैं। (यह मार्च 1905 की घटना है) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किसी बहुत ही प्यार करने वाले ने कहा कि आप दुआ करें कि ये पास हों जाएं इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फर्माया:- "हमें तो एसी बातों की तरफ ध्यान देने से बहुत बुरा लगता है हम एसी बातों के लिए दुआ नहीं करते हम को न नौकरीयों की आवश्यकता है न हमारी यह इच्छा है कि परिक्षाएं इसलिए पास की जाएं। हां इतनी बात है कि यह संसारिक ज्ञानों को इतना सीख लें जो धार्मिक सेवा में सहायक हो सकें। पास-फेल से कोई सबंध नहीं और कोई उद्धेश्य "

(अलफज़ल 16,सितम्बर-2000 ई.)

6. शिकायत करना सही नहीं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमेशा ही अपनी जमाअत को यह नसीहत फर्माया करते थे कि मुझ से अपने किसी भाई की शिकायत न किया करो। अगर तुम्हारी शिकायत करने से,हमारे दिल में दुआ करने से उस के लिए रोक पैदा हो जाए तो वह दुआ से वंचित हो जाएगा और तुम्हारे कारण से वंचित हो जाएगा। अत: तुम हमेशा अपने भाईयों की भलाई को प्राथमिकता दो और शिकायत करने से दूर ही रहा करो और अपने भाई के लिए दुआ ही किया करो ताकि वह इस गल्ती को खुदा के फज़ल से फिर न करे और तुम खुदा तआला की प्रसन्नता के वारिस बन जाओ।

(अलफज़ल 1,अप्रेल-2000 ई.)

7. हम दुआ करने के लिए आए हैं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम गुरदासपुर में ....मुकद्दमे के दिनों में वहां रह रहे थे। हज़ूर के लिए एक दुआ करने के लिए घर बनाया गया। इस में एक पशमीने की चादर नमाज़ पढ़ने के लिए रखी गई थी। कोई व्यक्ति उसे उठाकर ले गया। इस के गुम हो जाने पर किसी ने हज़ूर को बताया कि यहां एक पशमीने की चादर थी। हज़ूर ने सुन कर फर्माया हम दुआ करने के लिए आए हैं या नमाज़ के लिए बिछाया हुआ कपड़ा देखने के लिए ?

(अलफज़ल 20,मई-2000 ई.)

8. अल्लाह तआला की नौकरी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नौजवानी की अवस्था में आपके पिताजी (हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब) को आप के अकेले रहने और सादगी के कारण बहुत चिंता रहती थी कि इन्ही हालात में आप की शादी कर दी गई तो पत्नी और बच्चे कहां से खाएंगे-पिएंगे। आप फर्माते थे कि बड़े-बड़े अंग्रेज़ी अधिकारीयों से मेरी भेंट होती है। वे हमारा सम्मान करते हैं तुम को नौकरी के लिए पत्र लिख देता हूं परन्तु आप जबाब देते कि "पिताजी बताओ तो सही कि अधिकारीयों के अधिकारी और संसार के मालिक का नौकर हूं और अपने जगत के पालनहार की आज्ञापालन करने वाला हूं उस को किसी नौकरी की क्या चिन्ता है।"

(अलफज़ल 10,सितम्बर-1998 ई.)

9.कयामत तक जारी क्रिकेट

तअलीमुल क़ुरआन मदरसा कादियान के छात्रों का क्रिकेट मैच था। बच्चों की ख़ुशी बढ़ाने के लिए कुछ बुज़ुर्ग भी शामिल हो गए। खेल में नहीं बल्कि खेल का आनंद लेने के लिए और मैदान में चले गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक बेटे ने बचपन की सादगी के कारण कहा अब्बा तुम क्यों क्रिकेट पर नहीं गए ? यह वह समय था जबकि आप लिख रहे थे। बच्चे का स्वाल सुन कर.....फर्मामा "वे तो खेल कर वापिस आ जाएंगे परन्तु मैं वह क्रिकेट खेल रहा हूं जो क्यामत तक चलता रहेगा।"

(अलफज़ल 19,मार्च-1998 ई.)

10. शारीरिक मशीन का सुधार

एक बार कादियान में दिल्ली के एक मित्र ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की जिस के बाद दुआ हुई। मज्लिस में किसी मित्र ने उन के बारे में दुआ का निवेदन किया कि वह एक नई मशीन अविष्कार करने की कोशिश कर रहे हैं खुदा उन्हे सफलता प्रदान करे। आप अलैहिस्सलाम ने फर्माया:- "पहले इनकी मशीनरी तो संवरनी चाहिए जब यह मशीन सही हो जाए तो और अविष्कार भी सही

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 11 Aug 2016 Issue No. 23

MANAGER : NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
Tel. : +91-1872-224757
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

हो सकते हैं।”

(अलफज़ल 16,अप्रेल-1998 ई.)

11. सम्मान वह जो आसमान पर हो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम गुरदासपुर में थे एक दिन आप के सामने वर्णन किया गया कि यह मजिस्ट्रेट आपको कुर्सी नहीं देता और पहले मजिस्ट्रेट (जितने भी मुकद्दमों में आप गए थे) सब कुर्सी देते रहे हैं। इस के बारे में डिप्टी कमीशनर साहिब बहादुर को बताया जाए। हज़ूर सुन कर फर्माने लगे:- “सम्मान वह होता है जो आसमान पर हो। क्या हमारा सम्मान छोटी सी लकड़ी पर आ गया है एसा निवेदन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। तकलीफें और मुसीबतें हमारा हिस्सा हैं।”

(अलफज़ल 23,अक्तूबर-1999 ई.)

12. हथकड़ी - सोने का कंगन

मार्टीन मजिस्ट्रेट ज़िला अमृतसर ने (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) के नाम गिरफतारी का वारंट जारी किया। इसी दौरान वह मुकद्दमा गुरदासपुर की अदालत में कानूनी आधार पर परिवर्तित हो गया.....आप को हालात का पता चला तो आप ने फर्माया कि ख़ुदा के रास्ते में हम हथकड़ी को सोने का कंगन मानते हैं। प्रसन्न होते हैं और ख़ुशी से पहनते हैं।

(अलफज़ल 4,फरवरी-1999 ई.)

13. बीवी की ख़ुशी के लिए

शादी के बाद हज़रत अम्मा जान जब पहली बार दिल्ली से कादियान आईं तो आप को बताया गया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को गुड़ के मीठे चावल बहुत पसंद हैं। आप ने बहुत प्रेम के साथ मीठे चावल बनाने का प्रबंध किया। थोड़े से चावल मंगवाए इस में चार गुना गुड़ डाल दिया। जब पतीली चूल्हे से उतारी गई और चावल बर्तन में डाले तो देख कर बहुत दुख हुआ कि यह तो खराब हो गए हैं। उधर खाने का समय निकट था। आप हैरान थीं कि अब क्या करुं ? इतने में आप आ गए। आप (हज़रत अम्मा जान) का चेहरा देखा जो दुख और सदमे से रोने वालीयों की तरह बना हुआ था। आप देख कर मुस्कुराए और कहा:- क्या चावल अच्छे न पकने का दुख है ? फिर फर्माया नहीं यह तो बहुत अच्छे बने हैं। बिलकुल मेरे खाने के अनुसार बने हैं। एसे अधिक गुड़ वाले ही तो मुझे पसंद हैं। यह बहुत ही अच्छे हैं और फिर बहुत ही खुश होकर खाए। आप फर्माती थीं कि:- “हज़रत साहिब ने मुझे ख़ुश करने के लिए इतनी बातें कीं कि मेरा दिल भी खुश हो गया।”

(अलफज़ल 26,मार्च-1998 ई.)

14. दुनिया की नश्वरता पर सदैव नज़र

हज़रत मास्टर चौधरी मुहम्मद अली खान साहिब की आखों देखी गवाही है कि “कर्म दीन के मुकद्दमे की अंतिम पेशी पर निर्णय की तिथि के एक दिन पहले आप ने अस्र की नमाज़ के समय हज़रत मौलाना नूरु दीन साहिब और हज़रत मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब अमरोहा और दुसरे लोगों से जिन में यह विनीत भी शामिल था फर्माया कि हम ने ख़वाव (स्पना) देखा है कि हम सफेद घोड़े पर सवार बाहर से घर को आ रहे हैं और हमारे घरवाले यह शब्द कह रहे हैं कि हमारा नुक्सान हो गया (शायद रुपयों का) तो मैने कहा कि कोई बात नहीं,मैं तो सही-सलामत आ गया हूं। इस ख़वाव की सच्चाई आप ने यह बताई कि इस से पता चलता है कि जज (जो बहुत ही द्धेष रखने वाला आर्य है और आप के विरुद्ध फैसला करने को व्याकुल है) हमें जुर्माना आदि का दण्ड देगा और दुसरे प्रकार का दण्ड न दे सकेगा। अंतत: उच्च न्यायलय से हम बरी साबित होंगे और उस की शरारतों से हम बच जाएंगे। अत: दूसरे दिन ऐसा ही हुआ कि जज ने आपके विरुद्ध जुर्माने का आदेश दिया जिसका उसी समय भुगतान कर दिया गया।”

(अलफज़ल 23,अक्तूबर-1999 ई.)

15. ख़ुदा स्वरुप व्यक्तित्व

हज़रत शेख मुहम्मद इस्माईल साहिब वर्णन करते हैं कि:-

“हम ने देखा हम को तो ऐसा लगा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हर समय खुदा के प्रेम में चूर हैं....जब सुना यही सुना कि अल्लाह तआला के बन्दों पर इतने उपकार हैं कि अगर बंदा गिनना चाहे तो गिन नहीं सकता। हर समय आपको यही ध्यान रहता था कि जमाअत की अच्छी तरबियत हो। इस के लिए आप फर्माया करते थे कि यह संसार तो कुछ दिन का है हमारे मित्रों को अल्लाह के धर्म की सेवा में लगे रहना चाहिए।”(अलफज़ल 4,फरवरी-1999 ई.)

16 .निस्पृहता की शान

एक बार हज़रत मौलवी नूरुदीन साहिब ने एक पत्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में पेश किया कि किसी राजा के राज्य के एक वज़ीर ने मुझे लिखा है कि अमुक राजा की तरफ से अपने दावों की एक संक्षेप पुस्तक लिखी जाए तो वह चाहता भी है हिदायत पा जाए और साथ ही निवेदन किया है कि हज़ूर लिख दें बरकत बाली बात है। चाहे इस में विशेष रुप से सम्बोधित न किया जाए। फर्माया:-“ मौलवी साहिब अगर उस में सत्य को पहचानने की इतनी तड़प है तो वह सीधे-सीधे क्यों नहीं लिखता। खुदा के नबीयों में अपनी एक बढ़पन्न की शान होती है। यह लोग अमीरों (बड़े-बड़े बादशाह आदि) के लिए बढ़पन्न वाले और गरीबों के लिए विनम्र होते हैं। हमारा समय कोई साधारण नहीं है।”

(अलफज़ल 2,जून-2001 ई.)

17 मोमिन की शान

हज़रत हकीम मौलवी नूरुदीन भैरवी वर्णन करते हैं कि:-

“एक अल्लाह से भय रखने वाला ज्ञानी मैंने देखा है। एक विरोधी के कुछ एतराज़ों के बारे में मैने निवेदन किया कि उनके उत्तर के लिए मुझे अभी यह सही लगता है कि या तो उनके एतराज़ों का वर्णन ही न करुं या अगर करुं तो इल्ज़ामी उत्तर दे दूं। यह सुन कर आप को जोश आ गया आपने फर्माया:- जिस बात पर तुम्हे स्वयं संतुष्टि नहीं उसे दूसरों को मनवाते हो ? मोमिन ऐसा कदापि नहीं होता,यह सन्तोषजनक शब्द सुन कर मुझे भरोसा हो गया कि यह बुज़ुर्ग अल्लाह का बहुत भय रखने वाला है और कोई बात नहीं करता जिसका स्वयं उसे भरोसा नहीं, उस वुज़ुर्ग का नाम मिर्ज़ा था। ''

(अलफज़ल 2,दिसम्बर-2000 ई.)

18.धर्म का आत्मसम्मान

एक बार आवश्यकता इस बात की हुई कि कादियान में एक ईबरानी (भाषा) का ज्ञानी बुला लिया जाए। अत: एक व्यक्ति कहीं से बुला लिया गया..... हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बातों-बातों में उस से पुछा कि आप क्या काम करते हैं। उस ने कहा मैं इसाई मिशन में कार्यकर्ता हूं और इंजील,तौरात और इबरानी पढ़ाता हूं। यह सुन कर आप भीतर चले गए और हज़रत मौलवी नूरुदीन साहिब के द्धारा उस के आने-जाने का किराया और कुछ अधिक हज़ूर ने भिजवा दिया कि ऐसे व्यक्ति को जिस में धर्म की ग़ैरत नहीं, मैं रखना नहीं चाहता।

(अलफज़ल 10,दिसम्बर-1998 ई.)

(रोज़नामा अलफज़ल 18 मार्च 2005,पृष्ठ 7 से उद्धरित)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad